



钢笔书法系列丛书

书写者：

杨君生（楷书）

唐长茂（行书）

# 为人处世

## 钢笔字帖



GUANGDONG NORMAL UNIVERSITY PRESS

广东师范大学出版社

钢笔书法系列丛书

WEIRENCHUSHIGANGBIZITIE

# 为人处世钢笔字帖

书写者：

杨君生（楷书）

唐长茂（行书）

广西师范大学出版社

· 桂林 ·

## 图书在版编目 (CIP) 数据

为人处世钢笔字帖 / 杨君生, 唐长茂书. —桂林: 广西师范大学出版社, 2003. 1

(钢笔书法系列丛书)

ISBN 7-5633-3805-5

I. 为… II. ①杨… ②唐… III. 汉字—钢笔字—法帖 IV. J292.12

中国版本图书馆 CIP 数据核字 (2002) 第 102990 号

广西师范大学出版社出版发行

{ 桂林市育才路 15 号 邮政编码: 541004 }  
{ 网址: <http://www.bbtpress.com.cn> }

出版人: 萧启明

全国新华书店经销

广西民族印刷厂印刷

(广西南宁市明秀西路 53 号 邮政编码: 530001)

开本: 889 mm × 1 240 mm 1/32

印张: 4.625

2003 年 1 月第 1 版 2003 年 1 月第 1 次印刷

印数: 00 001 ~ 10 000 定价: 9.80 元

如发现印装质量问题, 影响阅读, 请与印刷厂联系调换。

# 目录

## 一、修身自省篇 1

1. 立志 1
2. 气节 8
3. 胸襟 16
4. 律己 23
5. 慎独 30
6. 改过 37

## 二、友谊爱情篇 44

1. 友谊 44
2. 交友 52
3. 守信 59
4. 爱情 67
5. 忠贞 75

## 三、家和孝敬篇 83

1. 敬老 83
2. 教子 89
3. 俭朴 95
4. 邻里 101
5. 健康 106

## 四、社会交际 113

1. 尊师 113
2. 礼让 119
3. 用人 125
4. 宽容 131
5. 勿贪 137



|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

基础，人创道保反循归。“三可  
基的的的期神。”因卒说，不  
的岖难长长精要而子夫  
功崎艰漫中取必非，孔匹  
成在在在程进势习而也，  
以能中，上，过的志，俗因帅  
得才程路养盛无随下”夺也”  
业志，历道修旺人且，污可志  
事有生业德持之，苟于军夺  
了追  
识，往  
一求往  
般卓会  
说越促  
来的使  
个心自  
人理己  
有意更

|   |   |   |    |   |   |   |   |   |
|---|---|---|----|---|---|---|---|---|
| 具 | 进 | 取 | 心  | 从 | 而 | 也 | 就 | 有 |
| 助 | 于 | 自 | 己  | 取 | 得 | 更 | 大 | 的 |
| 成 | 绩 | 因 | 此  | 可 | 以 | 这 | 样 | 说 |
| 每 | 个 | 人 | 所  | 取 | 得 | 的 | 成 | 绩 |
| 之 | 所 | 以 | 有  | 大 | 小 | 高 | 低 | 的 |
| 不 | 同 | 首 | 先  | 是 | 由 | 每 | 个 | 人 |
| 立 | 志 | 的 | 高  | 低 | 不 | 同 | 所 | 决 |
| 定 | 的 |   |    |   |   |   |   |   |
|   |   | 志 | 有  | 大 | 小 | 之 | 分 | 高 |
|   |   | 别 | 鲲鹏 | 鹏 | 之 | 志 | 在 | 九 |
| 低 | 之 | 背 | 负  | 青 | 天 | 与 | 风 | 云 |
| 万 | 里 | 燕 | 雀  | 之 | 志 | 在 | 树 | 杈 |
| 搏 | 斗 | 跳 | 跃  | 咏 | 食 | 自 | 得 | 其 |
| 之 | 间 | 导 | 了  | 秦 | 末 | 农 | 民 | 起 |
| 乐 | 领 |   |    |   |   |   |   |   |

|    |    |     |    |    |    |    |    |   |
|----|----|-----|----|----|----|----|----|---|
| 义， | 导  | 致   | 了  | 秦  | 王  | 朝  | 覆  | 灭 |
| 的  | 农  | 民   | 领  | 袖  | 陈  | 胜  | 有  | 一 |
| 句  | 名  | 言   | “燕 | 崔  | 焉  | 知  | 鸿  | 鹄 |
| 之  | 志  | 哉！” | 南  | 北  | 朝  | 时  | 的  | 宗 |
| 意， | 少  | 年   | 就  | 有  | 大  | 志  | “愿 | 乘 |
| 长  | 风  | 破   | 万  | 里  | 浪” | 的  | 确  | 不 |
| 同  | 凡  | 响。  |    |    |    |    |    |   |
|    |    | 至   | 于  | 文  | 人  | 骚  | 客  | 言 |
| 志  | 的  | 诗   | 词  | 更  | 是  | 不  | 可  | 胜 |
| 数  | 曹  | 操   | 的  | “老 | 骥  | 伏  | 朽  | 志 |
| 在  | 干  | 里   | 烈  | 士  | 暮  | 年  | 壮  | 心 |
| 不  | 已” | 陶   | 渊  | 明  | 的  | “精 | 卫  | 衔 |
| 微  | 木  | 将   | 以  | 填  | 东  | 海” | 李  | 世 |
| 民  | 的  | “心  | 随  | 朗  | 月  | 高  | 志  | 与 |

|    |   |    |    |    |   |    |    |    |
|----|---|----|----|----|---|----|----|----|
| 秋  | 霜 | 洁” | 杜  | 甫  | 的 | “非 | 无  | 江  |
| 海  | 志 | 潇  | 洒  | 送  | 日 | 月” | 刘  | 禹  |
| 锡  | 的 | “莫 | 道  | 桑  | 榆 | 晚  | 微  | 霞  |
| 尚  | 满 | 天” | 白  | 居  | 易 | 的  | “怜 | 君  |
| 头  | 早 | 白  | 其  | 志  | 竟 | 不  | 衰” | 苏  |
| 轼  | 的 | “回 | 狂  | 澜  | 于 | 既  | 倒  | 支  |
| 大  | 厦 | 于  | 将  | 倾” | 陆 | 游  | 的  | “壮 |
| 心  | 未 | 与  | 年  | 俱  | 老 | 死  | 去  | 犹  |
| 能  | 作 | 鬼  | 雄” | 李  | 清 | 照  | 的  | “生 |
| 当  | 作 | 人  | 杰  | 死  | 亦 | 为  | 鬼  | 雄” |
| …… | 这 | 些  | 诗  | 文  | 为 | 中  | 华  | 民  |
| 族  | 儿 | 女  | 树  | 立  | 凌 | 云  | 壮  | 志  |
| 起  | 到 | 了  | 不  | 可  | 估 | 量  | 的  | 重  |
| 大  | 作 | 用。 |    |    |   |    |    |    |

的功以大业自能充为利实或安能  
域成可立大化感己己的踏者会不  
领人记先成强任自自家搏微往且  
何名传是以能责砺使国拼低往苟  
任的或不得远的磨促业力向者循  
看外传人才高会地能事努志浅因  
翻中自一后志社格己的去而短状  
今的无而立对严自民而作光现  
古者说志的己更实人益工目于

|   |   |   |   |   |   |    |   |    |
|---|---|---|---|---|---|----|---|----|
| 或 | 很 | 少 | 有 | 大 | 的 | 作  | 为 | 更  |
| 不 | 敢 | 大 | 胆 | 创 | 新 |    |   |    |
| 对 | 于 | 珍 | 惜 | 人 | 生 | 吧! | 人 | 生  |
| 都 | 只 | 我 | 们 | 每 | 个 | 人  | 而 | 言  |
|   |   | 有 | 一 | 次 |   |    |   |    |
|   |   | 树 | 雄 | 心 | 立 | 壮  | 志 | 吧! |
| 这 | 是 | 我 | 们 | 珍 | 惜 | 人  | 生 | 至  |
| 关 | 重 | 要 | 的 | 一 | 步 | 是  | 我 | 们  |
| 修 | 身 | 处 | 世 | 的 | 重 | 要  | 基 | 础  |



|   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 为 | 人 | 何 | 谓 | 气 | 节 | 气 | 节 | 是 |
| 气 | 和 | 处 | 世 | 所 | 必 | 需 | 的 | 志 |
|   |   | 节 | 操 |   |   |   |   |   |
| 准 | 则 | 气 | 节 | 是 | 一 | 种 | 人 | 生 |
| 现 | 在 | 一 | 种 | 道 | 德 | 修 | 养 | 体 |
| 阶 | 段 | 历 | 史 | 发 | 展 | 的 | 各 | 个 |
| 面 | 大 | 和 | 人 | 生 | 的 | 各 | 个 | 方 |
| 少 | 不 | 文 | 夫 | 为 | 人 | 处 | 世 | 最 |
| 气 | 节 | 了 | 的 | 就 | 是 | 这 | 一 | 段 |
|   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|   |   | 守 | 节 | 者 | 诚 | 信 | 无 | 欺 |

|   |    |    |   |   |    |    |   |   |
|---|----|----|---|---|----|----|---|---|
| 见 | 利  | 思  | 义 | 将 | 节  | 操  | 看 | 得 |
| 比 | 生  | 命  | 还 | 重 | 要  | 更  | 不 | 要 |
| 说 | 生  | 命  | 之 | 外 | 的  | 金  | 钱 | 财 |
| 富 | 与  | 虚  | 名 | 了 | “富 | 贵  | 不 | 能 |
| 淫 | 贫  | 贱  | 不 | 能 | 移  | 威  | 武 | 不 |
| 能 | 屈  | 是  | 守 | 节 | 者  | 的  | 行 | 为 |
| 标 | 准  | “宁 | 为 | 玉 | 碎  | 不  | 高 | 瓦 |
| 全 | 是  | 守  | 节 | 者 | 的  | 崇  | 汉 | 信 |
| 条 | 元  | 代  | 戏 | 剧 | 家  | 关  | 煮 | 卿 |
| 说 | “我 | 是  | 个 | 蒸 | 不  | 烂  | 响 | 不 |
| 熟 | 捶  | 不  | 扁 | 炒 | 不  | 爆  | 这 | 当 |
| 当 | 的  | 一  | 粒 | 铜 | 豌  | 豆” | 写 | 就 |
| 是 | 守  | 节  | 者 | 的 | 生  | 动  | 见 | 照 |
|   |    | 另  | 有 | 一 | 种  | 人  |   | 利 |



首得保害，处于很称是标“墙底厚”  
事的危好至得我们就为地条根皮  
凡人命受取卖，看我奶行诛信轻尖  
人，个生不捞出往人“有的天的脚嘴  
后是是命能以往种者。人已，行重笋，  
己的的生人可们这节类为奉头竹  
先虑虑要个就他轻。失这不们苇，中  
义，考考只要魂节，很为是“人他芦山  
忘先失存。只灵气淡之娘准；是上浅；

|   |    |     |    |   |    |    |    |    |
|---|----|-----|----|---|----|----|----|----|
| 腹 | 中  | 空”  | 正  | 是 | 失  | 节  | 者  | 的  |
| 生 | 动  | 写   | 照。 |   |    |    |    |    |
|   |    | 普   | 通  | 的 | 时  | 候， | 平  | 常  |
| 的 | 日  | 子，  | 也  | 许 | 不  | 易  | 区  | 分  |
| 出 | 气  | 节   | 的  | 高 | 下， | 然  | 而， | “在 |
| 命 | 运  | 的   | 颠  | 沛 | 中， | 最  | 可  | 以  |
| 看 | 出  | 人   | 们  | 的 | 气  | 节” | (莎 | 士  |
| 比 | 亚  | 语)。 | 是  | 的 | 在  | 逆  | 境  | 中， |
| 在 | 危  | 难   | 中， | 在 | 权  | 钱  | 的  | 诱  |
| 惑 | 面  | 前，  | 一  | 个 | 人  | 的  | 气  | 节  |
| 就 | 高  | 低   | 分  | 明 | 了。 |    |    |    |
|   |    | 在   | 中  | 国 | 历  | 史  | 上， | 具  |
| 有 | 高  | 尚   | 的  | 气 | 节  | 者， | 数  | 不  |
| 胜 | 数； | 唐   | 睢  | 苏 | 武  | 文  | 天  | 祥。 |



数胡每临的命运不苦的写鬼  
无刘们面择的命且艰己谱泣  
及如他族扶人的苟种自迹地  
以者等民大个族不种以事天诗  
徐命等与或将民起了验雄惊史节  
则革敏家亡刻家一受考英曲壮气  
林的志国存时国在经的和曲悲有  
飞贞方在死键与系缩难节一的  
岳坚兰每生关运联退磨气了神

高志子地贪的真逢特发护敢于  
崇人君撑不得率意心误维而服  
是仁是天们应的曲欢谬能比屈  
界的节擎他不有以的与候为不  
境外气时石缕特则人理时并暴  
神中为世柱一持原别真的理强力  
精今认处强丝坚弃讨当突真抗压  
的古都人坚一利放来是冲持抵何  
者的士为的图财不迎别生坚于任